International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-07-2021, Accepted: 02-08-2021, Published: 18-08-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 85-90

राधानाथ राय के काव्य में प्रणय चेतना

चिन्मयी मिश्र
शोधार्थी, रेवेंशॉ विश्वविद्यालय, कटक, ओडिशा, भारत

सारांश
प्रेम सबसे बलवान होता है। प्रेम करनेवाले युवायों में इसका जबरदस्त असर दिखता है। यहाँ तक कि प्रेमियों का स्वभाव प्रेम के प्रभाव से आमूलचूल बदल जाता है। जो शर्मिले स्वभाव का है वह इस प्रकार का कार्य करता है जिसे देखकर लोग उसे निर्ल्लज ही कहेंगे। जो भयालू स्वभाव का है वह अकेले अँधेरी रात में अपने प्रियपात्र से मिलने के लिये बेफिकर निकल पडता है। अपने प्रेम को साकार करने के लिये सामाजिक आदव-कायदा, रीति-रिवाज, परम्परा को तोडना उनके लिये मामूली बात है। परिवार के बुजूगों की रोक-थाम उन्हें अखरता है और वे उनके सामने रोक-ठोक अशालिन मन्तव्य दे देते हैं। कोई अपने पिताजी के शत्रु से प्रेम करता है एवं उसे प्रतिष्ठित करने के लिये अपने पिताजी की आबरू को भू-लुण्ठित कर देता है। फिर कोई एक-तरफा प्रेम करके अपने प्यार को जबरदस्ती पाना चाहता है जिसका परिणाम किसी भी पक्ष के हित में नहीं जाता है। इन प्रेमियों की नजर के सामने केवल उनका प्रियपात्र होता है। न वे अपने परिवार की सोचते हैं, न अपने समाज की। इन प्रेमियों का जीवन एक-दूसरे पर अवलम्बित होता है। यद्यपि उनका एकनिष्ठ प्रेम सराहनीय है फिर भी इनका अपने समाज से दुर भाग जाने की रवैया चिंता का विषय है। यदि किसी कारण से उनका प्रेम असफल हो जाता है तो खुदकुशी करने के अलावा कोई दूसरा रास्ता उन्हें नहीं सूझता है। इसके दो कारण हैं। पहला कारण है ये प्रेमी लोग भावातिरेक से बहनेवाले होते हैं। दुसरा कारण है चूंकि इन्होंने अपने समाज की अनदेखी की है, इनके दुर्द्दिन में समाज की हमदर्दी इनको नहीं मिल पाती है। ये सब कुछ प्रेम तथा प्रणय की ही देन है जो युवाओं के दिमाग में चढ कर इन सारे कुकृत्यों को अंजाम देने के लिये उकसाते हैं। राधानाथ राय के समय युवाओं का प्रेम एक समाजिक समस्या बन कर उभरा था जिसको सुधारने के लिये कवि ने काव्य का सहारा लिया है और परोक्ष रूप से उन प्रेमियों पर करारा व्यंग्य- विद्रुप कसा है।)

मूलशब्द: ओडिआ, राधानाथ राय, काव्य, प्रणय चेतना

प्रस्तावना

राधानाथ जी का जन्म 1948 को ओडिशा के बालेश्वर जिले के केदारपुर नामक गाँव में हुआ था। ओडिआ साहित्य में आधुनिकता का प्रारम्भ राधानाथ राय के अभ्युथान के साथ- साथ होता है। इसलिये उनके नाम के आधार पर एक युग चल पडा जिसे `राधानाथ युग' कहा जाता है।

राधानाथ जी के समय ओडिशा में औपचारिक शिक्षा के लिए पाठ्य-पुस्तकों की कमी अखरती थी। इस कमी को पूरा करने के लिए राधानाथ जी ने कई काव्य लिखे। वे पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित थे। उन्होंने भारतीय प्राचीन साहित्य, पुराणों तथा लोककथाओं ,में से कथावस्थुओं को लीं और स्वकीय प्रतीभा तथा कल्पना-शक्ति के संयोजन से अपने काव्य को सरस तथा हृदयस्पर्शी बनाया जिनको काव्य-पिपासुओं ने खूब सराहा। `केदारगौरी', `चंद्रभागा', `नंदिकेश्वरी', `उषा', `ययातिकेशरी' `पार्वती' `चिलिका' ``महायात्रा' आदि उनके कई प्रसिद्ध काव्य हैं।

प्रणय चेतना की दृष्टि से लगभग उनके सारे काव्य सम्पन्न लगते हैं।

अध्ययन क्षेत्र

राधानाथ राय के काव्य की प्रणय चेतना पर विचार करके निष्कर्ष तक पहुँचना ही वास्तविक रूप से हमारा अध्ययन क्षेत्र है। उनके काव्य के अंदर खोज करके हम देखना चाहते हैं कि उनकी प्रणय चेतना की दिशा तशा दशा किस तरफ जाती हैं ? उनके काव्य का अनुशीलन करने पर प्रणय चेतना की निम्नलिखित विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

1. प्रेम दुनिया में सबसे बलवान है

` नंदिकेश्वरी' काव्य में प्रेम को सबसे बलवान करार देते हुए कवि मतव्यक्त करते हैं कि यह युवाओं की मानसिकता कोआमूलचूल बदल के रख देता है। यह अबला को बीरांगना बना देता है तथा जो प्रेमी भीरु है इसके प्रभाव से वह डट कर मुकावला करने की शक्ति हासिल कर लेता है। युवावस्था में उद्योग, साहस, बुद्धि आदि प्रेम की ही उपज हैं। असम्भव को सम्भव बना देने की शक्ति प्रेम रखता है:

`महाबली प्रेम अटइ महिर
प्रेम सिना करे अबला कु बीर
प्रेम दिए बुद्धि उद्योग साहस
प्रेम करिपारे अबश कु बश।
भीरु नाम जेणु बहंति स्वभावे
बीर हुअन्ति से प्रेमर प्रभावे।'[1]

(इस धरती में प्रेम सबसे बलवान होता है। वह अबला को बीरांगना बना देता है। प्रेम से बुद्धि, उद्योग,साहस आदि युवायों में भर जाते हैं। जो बस की बात नहीं है उसे वे बस में कर लेते हैं। प्रेम के प्रभाव से स्वभाव से भीरु व्यक्ति भी बीर बन जाता है।)
लेकिन ध्यान देने की बात है कि प्रेम की दी हुई इन शक्तियों (बुद्धि, साहस तथा बल) का प्रयोग केवल अपने प्रियपात्र को पाने के लिए ही करते हैं। इससे न समाज को, न अपने परिवारवालों को, न अपने रिशेदारों को कुछ फायदा पहूँचता है। प्रेमी अपने स्वार्थ की खातिर इन शक्तियों का प्रयोग करते हैं।

2. प्रेम से प्रेमी निर्ल्लज तथा निडर बन जाते हैं:

प्रेमी किसी भी प्रकार से अपने प्रियपात्र को पाना चाहते हैं। इसी स्वार्थ को ध्यान में रखते हुए वे निडरता पूर्वक जो कार्य करते हैं समाज के लोग उन्हें निर्ल्लज ही कहेंगे। राधानाथ के काव्य `केदारगौरी' में इसका प्रमाण मिल जाता है। नायिका गौरी अभिसार के लिये जा रही है। उसके मन में उसका प्रेमी (केदार) बसे हुए हैं। प्रेम से इस प्रकार वह अंधी हो गई है कि कोई दूसरी चिंता उसमें नहीं है। रात के सन्नाटे में वह अकेली घर से बाहर निकल पडती है। उसके मन में किसी प्रकार का भय नहीं है।
न वह सोचती है कि उसके चले जाने से घरवालों पर क्या बीतेगा और समाज के लोग उसके बारे क्या-क्या भद्दी टिप्पणियाँ करेंगे ? जो लडकी कभी शर्मिली स्वभाव की थी अब वह प्रेम के प्रभाव से निर्ल्लज बन गई है। प्रेम में डूबनेवालों की यही अनोखी दशा होती है। चारों तरफ अँधकार है, सन्नाटा है, एक प्रकार का डरावना वातावरण है; लेकिन नायिका बेफिकर, निडरता से अपने प्रियतम से मिलने के लिये आगे बढ रही है। कवि लिखते हैं :

`अँधारे बाहारि पंकोरूहमुखी संकेत स्थल कु गला
प्रेमरे मज्जिले असाध्य साधन हेले करंन्ति अबला
कुटिलकेशी कूटजमूले बसि कांत कु रहिला चाहिँ
प्रीति ढालिछि मन प्राण बाला, आन कथा मने नाहिँ
चौदिगे अँधार, हृदाकाशे तार राजे प्रेम- सुधाकर
कण्टककानन पुष्प- उपवन कला प्रेम –बाजिगर।'[2]

(शर्मिली नायिका मथावनत होती हुई अभिसार के लिये संकेतस्थल को जा रही है। उसका मन और प्राण प्रेम से मसगूल है। इसलिये प्रीति के अलावा किसी दूसरी सोच उसमें नहीं है। प्रेम रूपी बाजीगर ने काँटों से भरे जँगल को प्रेयसी के लिये उपवन बना दिया है अर्थात कण्टक-कानन से उसे उपवन का सुख मिल रहा है। चारों तरफ अँधकार है, सन्नाटा है, लेकिन नायिका को कुछ फरक नहीं पडता है क्योंकि उसके हृदय रूपी आकाश में प्रेम रूपी चाँद अपनी किरणें बिखेर रहा है।)
प्रेम क्या नहीं कर सकता है ! जो नायिका कभी शर्मिली स्वभाव की थी उसे निर्ल्लज बना देता हैऔर जो अकेली बाहर जाने से डरती थी वह भयावनी रात में अकेली निडरता से बाहर निकल पडती है तथा प्रियतम से मिलने के लिए बेफिकर संकेतस्थल में पहुँच जाती है।

3. प्रेमियों का जीवन एक-दूसरे पर अवलम्बित होता है

`केदारगौरी' काव्य में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि प्रेमी एक-दूसरे के बिना अपने जीवन को व्यर्थ मानते हैं और इस प्रकार का दु:समय आने पर अपने जीवन का विसर्जन तक कर देते हैं। अभिसारिका गौरी के सँकेतस्थल में पहूँचने से पहले एक बाघ वहाँ आ पहूँच जाता है। उससे बचके गौरी एक गुफा (गुहा) में छुप जाती है। लेकिन उसके अनजाने में उसका अंगवस्त्र रास्ते में ही गिर पडता है। हिरन का शिकार करके आ रहा बाघ के मुँह से खून निकल रहा था।अंगवस्त्र को रास्ते में पाकर उसका टुकडा-टुकडा करने लगा। बाघ के मुँह का खून अंगवस्त्र के टुकडों में लग गया। बाघ चला गया। तब केदार (प्रेमिक) वहाँ आ पहुँच जाते हैं। खून से सिक्त अंगवस्त्र तथा बाघ के पद-चिन्ह को देखकर सोचने लगे कि जरूर गौरी को बाघ खा गया होगा। अपनी प्रेमिका की मौत से दु:खी होकर रोने लगते हैं। इतनी देर करके वे क्यों आये इसलिये पश्चाताप करने लगे। अपने को प्रिया की मौत का जिम्मेदार मानने लगे:

`गौरी कु सम्बोधि कहे बीर कांदि
आहारे पराणेश्वरी !
तो निधन भागी मुँहि सिना, जेणु
आसिलिनि बेग करि।
श्वपद शंकुल बनकु निशिरे
प्राणाधिकाकु पेषिलि
धिक ए प्राण कु ! छार प्राण नेइ
किम्पा भवने बसिलि।'[3]

(गौरी को सम्बोधित कर केदार रोते हुए बोलने लगे – `री प्राणेश्वरी ! तेरी मृत्यु के लिये मैं जिम्मेदार हूँ क्योंकि मैं यहाँ जल्दी नहीं आ पहुँच सका। जानवरों से भरे हुए जँगल को अपनी जान से प्यारी प्रिया को रात में क्यों बुलाया ? मेरे जीवन को धिक्कार है। क्यों इस नगन्य जीवन को लेकर मैं घर पर बैठा रहा ?)

केदार रोते हुए अपनी प्रेमिका का अंगवस्त्र को हृदय में धारण करके अपनी तलवार को सीने में भोंक देते हैं। लहु-लुहान होकर भूमि में उनका शरीर छटपटाने लगा। इतने में गौरी वहाँ आ पहुँच जाती है। प्रिय के हृदय में अपने अंगवस्त्र को देख कर समझ गई कि उन्होंने खुदकुशी की है। अनंत विषाद से गौरी आछन्न हो गई। सोचने लगी कि प्रियतम के बिना उसका जीवन व्यर्थ है। जिस रास्ते में प्रिय गये हैं उसी रास्ते में वह भी उनका अनुसरण करेगी ताकि मरने के बाद प्रिय की सहचरी बन के रह सकेगी:

`परलोक पथे कांतपद चिन्ह
जिबि मुँहि अनुसरि
मृत्यु घटाइला ए विरह, मृत्यु
करिदेब सहचरी।'[4]

(पति के पाँव के निशान का अनुसरण करती हुई मैं परलोक सिधारूँगी। मृत्यु ने यह विरह दिया है तो मृत्यु ही मुझे उनका सहचरी बना देगी।)

केवल `केदारगौरी' काव्य में नहीं, `उषा' काव्य में भी वही हुआ है। प्रेमिक जयंत अपनी प्रिया उषा से इतना अनुरक्त हैं कि सोचते हैं उषा ही उनका जीवन है। बार –बार उसका ध्यान मन को चला आता है। उषा के न मिलने से उसका जीवन टिक पाना असम्भव है:

`उषा गत प्राण, उषा तार ध्यान, उषा ता गति
उषा न लभिले पारिब कि प्राणे तिले बरति ?

बिफल हेब ए जीवन मोहर उषा-बिहुने
एभलि जीवन ठारु मृत्यु श्रेय सहस्र गुणे।'[5]

(नायिका उषा प्रेमिक जयंत का प्राण, ध्यान तथा गति है। उषा के बिना वह जिंदा नहीं रह सकता है। उसका जीवन उषा के बिना बिफल बनेगा। इस प्रकार के जीवन से मृत्यु ही श्रेयष्कर है।)

जयंत सोचते हैं कि उषा के बिना जीवन धारण करना बेकार है। इससे मृत्यु सहस्र गुण से अच्छी है। उषा भी जयंत के संदर्शन से इतना प्रेमासक्ता बन जाती है कि उसका शरीर पुलकित होने लगता है। कपोलों पर शरम की छाप दिखने लगती है। उसका मन जो नीरस हो चला था अब प्रणय के अंकुरोदगम से सरसित होने लगा है:

`मनु करिथिला निराशे प्रणय प्रसंग दुर
एबे अंकुरिला हृदये उद्दाम प्रेम-अंकुर।
तनु पुलकित अभिनय – प्रेम मोहन-बले
सुरंजित हेला अमल- कपोल लाज-पाटले।'[6]

(निराशा के कारण उषा के मन से प्रेम- प्रसंग दूर हो गये थे। जयंत को देखने के बाद उसके मन में प्रेम का अंकुर फूटने लगा। प्रेम के प्रभाव से शरीर में रोमांच होने लगा। शरम के मारे उसके कपोलों पर लालिमा छाने जाने लगी।)

प्रेमिका उषा अपने प्रणय के मुकावले संसार के सारे भौतिक सम्पदाओं को नगन्य मानती है। प्रणय में वह स्वर्गीय सुषमा को देख रही है। वह बोलती है कि यदि जयंत से मेरी शादी हो जाती है तो यह मर्त्यपुर मेरे लिये स्वर्ग बन जायेगा:

`ए गुण-सागर नागर हेले मो पराण सखा
होइजांता एहि मर्त्यपुर मोर पक्षे अलका।'[7]

(चतुर जयंत जिनमें सारे सदगुण भरे हुए हैं यदि मेरे पति बन जायेंगे तो मेरे लिए यह मर्त्यपुर स्वर्गलोक का सुख देनेवाला बन जायेगा।)

राधानाथ के काव्य में प्रेम की गहराई देखनी है तो ययातिकेशरी काव्य की आलोचना जरूरी हो जाती है। प्रेमियों की तुलना कोक-दम्पति के साथ करते हुए कवि ने कहा है कि अपने प्रियपात्र पास होने पर भी पलभर का विच्छेद प्रेमीयों को असह्य महसूस होता है:

` संगे थाइ सुद्धा बिच्छेदे बेनिए
उच्छन्न होइ सन्तत
दिने मणुथांति
निजकु जामिनी
कोक कोक-जायाबत।'[8]

(जिस प्रकार रात में कोक-दम्पति एक- दूसरे के साथ न मिल पाने के कारण मन दुखाते हैं उसी प्रकार की हालत प्रेमियों की दिन में होती है।).

राधानाथ के काव्य में प्रेम की पराकाष्ठा अनन्य है। प्रेमी एक-दूसरे को अपने लिए अपरिहार्य समझते हैं। उन्हें दुनिया से विदाय ले लेना मंजूर है लेकिन अपने प्रेमी छोड के रहना कतई मंजूर नहीं है। उनके लिए परिवार, रिश्तेदार, समाज,एवं जायदाद आदि कुछ भी मायने नहीं रखते हैं। केवल अपने प्यार के लिए वे जिंदा रहते हैं और मर जाते हैं।

4. एक-तरफा प्रेम किसी पक्ष के हित में नहीं होता है

कई युवाएँ जिससे प्रेम करते हैं उसमें उस प्रियपात्र की सहमति नहीं होती है। इसे हम एक-तरफा प्रेम कह सकते हैं। इस प्रकार का प्रेम किसी पक्ष का हित साधन नहीं करता है। अधिकंतु इसका परिणाम भयंकर होता है। राधानाथ राय के `चंद्रभागा' काव्य में एक-तरफा प्रेम की कुपरिणति दिखाई गई है तथा इस प्रकार के प्रेम से बचने की सलाह दी गयी है। अद्वितीया रूप-लावन्यमयी ऋषिकन्या चंद्रभागा के सौंदर्य से सूर्य देव मोहित हो जाते हैं एवं उसका सान्निध्य पाने के लिये उसका पीछा करते हैं। लेकिन स्वभाव से पुरूषों से विमुख चंद्रभागा उनसे बचने के लिये भाग निकलती है। प्रेम से विह्वल सूर्य देव उसे पकडने की जितनी कोशिश करते हैं उतना अधिक डर बालिका के हृदय में पैदा होता है:

`एहि रूपे हरि धाआंति
प्रेम भोले विह्वल
अबला बालाकु ए रूपे
भीति दिअइ बल।'[9]

(प्रेम से विह्वल सूर्य देव चंद्रभागा से मिलने के लिये उसके पीछे दौडते हैं। जितना-जितना वे उस बाला के करिब आते थे उतना-उतना अधिक अधिक भय का संचार उस बालिका में होता है।)

चंद्रभागा दौडती –हाँपती हुई सागर के किनारे आ पहूँच गई। अपनी ईमान बचाने के लिये उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था। उनके पीछे सूर्य देव थे। समुद्र के अंदर वह कूद पडती है। जिस प्रकार दिन के उजाले से तारे निष्प्रभ हो जाते हैं, जिस प्रकार जीवात्मा विश्वात्मा के अंदर समा जाती है, उसी प्रकार चंद्रभागा सागर की लहरों में समा गई। ध्यान से ऋषि सुमन्यु जान गये सूर्य देव की हरकत का शिकार उनकी बेटी हो चुकी है। गुस्से से आगबबूला ऋषि ने सूर्य देव को उनकी पूजार्चना कोणार्क में न होने का तथा उनका मंदिर गिर जाने का अभिशाप दिया। वही हुआ। कोणार्क में सुर्य भगवान का मन्दिर गिरने लगा एवं उसी दिन से सूर्य भगवान की पूजा वहाँ बंद हो गई।

एक-तरफा प्रेम न सूर्य भगवान के हित में गया न चंद्रभागा के हित में। सूर्य भगवान का मंदिर गिर गया और उनकी पूजा भी बंद हो गई। देवता भी बुरा कार्य करें (यहाँ जोर जबरदस्ती प्रेम की भीक्षा करना) उनकी यही दुर्दशा होती है। चंद्रभागा का कोई कसूर नहीं था। वह किसी की राक्षसी प्रवृत्ति का शिकार बन गई। ध्यान देने की बात यह है कि यहाँ सूर्य भगवान का एक-तरफा प्रेम राक्षसी प्रवृत्ति की कोटि में आयेगा; स्वर्गीय प्रेम की कोटि में कभी नहीं।

5. प्रेम के प्रभाव से प्रचलित मान्यता, परंपरा, रीति-रिवाज के खिलाफ प्रेमी हो जाते हैं

प्रेम करते समय प्रेमी केवल अपने प्रियपात्र की सोच रखते हैं, और किसी दूसरे की नहीं। उन्हें लगता है प्रचलित मान्यता, परंपरा, रीति-रिवाज उनके प्रेम के रास्ते के रोडे हैं। ये सब उनके प्रेम को साकार होने नहीं देंगे। केवल अडचनें डालेंगे। अत: प्रेम को साकार करना है तो इनकी उपेक्षा जरूरी है। जो काम समाज से ग्राह्य कभी नहीं होगा, वह काम कभी-कभी प्रेमी कर देते हैं। राधानाथ राय के काव्य `नंदिकेश्वरी' में इसका प्रमाण मिल जाता है। प्रेमिका नंदिकेश्वरी अपने पिता के सहज शत्रु चोडगंगदेव से प्रेम करती है। वह जानती है कि इस प्रेम के कारण उनके पिता तथा परिवार की दुर्गती होनेवाली है। समाज के लोग उसके बारे में कटु-टिप्पणियाँ कसेंगे। परंतु उस तरफ नंदिकेश्वरी का ध्यान नहीं है। उसे किसी भी हालत में अपना प्रेमी चोडगंगदेव चाहिये। केवल चाहिये नहीं, वह गर्व महसूस करेगी यदि उसकी प्रचेष्टा से उसके प्रेमी छत्रपति सम्राट बन सके तो। नंदिकेश्वरी को भरोसा है कि वह यह काम आसानी से कर सकेगी क्योंकि उसके पास प्रेम रूपी अमोघअस्त्र है। इस अस्त्र का प्रयोग करके वह असम्भव को भी सम्भव बना देगी। ऐसा वह कर सकेगी तो प्रेमिकाकूल में उसकी डंका बज उठेगी। यहाँ प्रेमिका होने का गर्व नंदिकेश्वरी में देखने लायक है:

`प्रेम बले तांकु करि छत्रपति
प्रेमिकाकूले मुँ टेकाइबि छति'[10]

(प्रेम के बल पर उन्हें छत्रपति सम्राट बना के प्रेमिकाकूल में, मैं डंका बजा दूँगी।)

नंदिकेश्वरी ऐसी प्रेम-दीवानी बन जाती है कि परंपरा के खिलाप वह अपने पिताजी का रोक-ठोक विरुद्धाचरण

करती है। उसके अनुसार पिता का बेटी पर पूर्ण-अधिकार ठीक नहीं है। जो शास्त्र इस मान्यता की तरफदारी करता है उसे नंदिकेश्वरी नमस्कार करती है:

`सुतारे पितांक पूर्ण अधिकार
भणे जेउँ शास्त्र ताकु नमस्कार।'[11]

(जो शास्त्र बताता है कि बेटी पर पिता का पूर्ण अधिकार है उसे मैं नमस्कार करती हूँ।)

तत्कालीन प्रेम की उग्र-प्रचेष्टाओं का समुचित परिप्रकाश राधानाथ राय के काव्य में हो सका है। एक तो अग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं दर्शन के प्रभाव से अपनी सभ्यता, सस्कृति, दर्शन, रीति-रिवाज,समाजिक मूल्यबोध से युवावर्ग दूर चले जाते हैं। दूसरा उन्हें इस काम में अधिक मदद प्रेम ही देता है। जैसे वे अंधे हो जाते हैं। अपने प्रियपात्र के अलावा उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता है। ओडिआ साहित्य में राधानाथ राय की प्रणय चेतना गतानुगतिकता से अलग एक स्वतंत्र प्रकार की प्रणय चेतना है। उन्होंने भूतकाल को देखा और उसमें से कथावस्तुएँ लीं, वर्तमान काल के प्रेमियों के हाव-भाव को परखा तथा कवि की तिसरी नजर का इस्तेमाल करके भविष्य काल की प्रणय चेतना को भाँप लिया और एक नये ढाँचे से अपने काव्य में प्रणय चेतना को रूप दिया:

` रूप र मोह तांकु पागल कला, प्रेम ओ प्रणय र
धाराबाहिकता ठारु से निजकु मुक्त कले, साहित्य रे
सृष्टि कले प्रेम-प्रणय र नूतन स्वरूप।'[12]

(राधानाथं जी को रूप के मोह ने पागल बना दिया। अपने को प्रणय की धारावाहिकता से उन्होंने मुक्त किया एवं साहित्य में उन्होंने प्रेम-प्रणय को लेकर एक नये स्वरूप की सर्जना की।)

गवेषक हृषीकेश पण्डा के अनुसार राधानाथ नारी तथा प्रकृति के सौंदर्य पर लट्टू थे। प्रेम एवं प्रणय के सार्वजनिक अधिकार को सराहा किंतु अंत में उसमें से वास्तविक सच्चाई को ही ग्रहण किया

`आधुनिक काव्यधारा र प्रवर्त्तक राधानाथ राय नारी
ओ प्रकृति रूप रे सौंदर्य आबिष्कार रे आग्रही
होइथिले। मात्र अंतिम जीवनरे से सौंदर्य अपेक्षा `सत्य'
कु श्रेय मने करिथिले।'[13]

(आधुनिक काव्यधारा का प्रवर्त्तक राधानाथ राय ने नारी एवं प्रकृति से सौंदर्य का आविष्कार किया। लेकिन जीवन के अंतिम सोपान में सौंदर्य से सत्य को अधिक श्रेयष्कर माना।) प्रेम तथा प्रणय में एक प्रकार की विद्रोह-भावना राधानाथ के काव्य में दिखती है। युवा मानस का यह विद्रोह प्रेम के क्षेत्र में कुछ सामाजिक परिवर्त्तन लाना चाहता है। लेकिन परिवार एवं समाज से दूर हट कर इस प्रकार का जो परवर्त्तन प्रेमी चाहते हैं, वह सरासर गलत है। क्योंकि आखिर वे इसी समाज में ही रहेंगे; किसी जँगल में नहीं। राधानाथ ने परोक्ष रूप से व्यंग्य-विद्रुपात्मक ढँग से प्रणय में लिप्त युवाओं को सुधर जाने का संदेश देते हैं। डॅ० अशोक कुमार महापात्र ने उचित ही कहा है:

`रोमाण्टिक काव्यानुभव र अन्यतम बलिष्ठ उपादान
`परिवर्त्तन पाइँ विद्रोह' राधानाथ साहित्यरे प्रत्यक्ष
भाबरे न हेले बि परोक्ष भाबरे, व्यंग- विद्रुपर
स्वरलिपिरे लिखित होइछि।'[14]

(रोमाण्टिक काव्यानुभव का वलिष्ठ उपादान ` परिवर्त्तन के लिये विद्रोह'राधानाथ साहित्य में प्रत्यक्ष रूप से नहीं, मगर परोक्ष रूप से व्यंग्य- विद्रुपात्मक स्वरलिपि में लिखा गया है।)

निष्कर्ष

1. प्रेम दुनिया में सबसे बलवान है।
2. प्रेम, प्रेमियों को निर्ल्लज तथा निडर बना देता है।
3. प्रेमियों का जीवन एक-दूसरे पर अवलम्बित होता है। प्रेम का एकनिष्ठ-रूप राधानाथीय प्रणय चेतना की विशेषता है।
4. एक-तरफा प्रेम किसी पक्ष के हित का साधन नहीं कर सकता है।
5. प्रचलित मान्यताओं,परम्पराओं, रीति-रिवाजों के खिलाफ जाने के लिए प्रेमियों को प्रेम उकसाता है।
6. अपने प्रेम पर इन प्रेमियों को बडा घमंड भी होता है।
7. समाज तथा परिवार से दूर भाग रहे प्रेमियों को सुधर जाने का परोक्ष-संदेश राधानाथ ने दिया है क्योंकि आगे चल कर वे इसी समाज का हिस्सा बनेंगे।
8. राधानाथ राय ने उन प्रेमियों पर व्यंग्य- विद्रुप कसा है जो सुधरने का नाम नहीं लेते हैं और अपने समाज से दूर भागते चले जाते हैं।

जहाँ तक प्रेम की पराकाष्ठा का सवाल है वह राधानाथ राय के काव्य में अनन्य है। प्रेमियों का प्रेम एकनिष्ठ है।

उनका जीवन एक-दूसरे पर अवलम्बित है। प्रेम के लिये वे मरने-मिटने की कसम खाते हैं। अपने प्यार को हासिल करने के लिये सब कुछ दाँव पर लगा देते है। यहाँ तक कि अपने परिवार, रिश्तेदार, समाज आदि कुछ भी बच नहीं पाते हैं। प्रियपात्र को हासिल करने के रास्ते में किसी प्रकार की अडचन कहीं से भी आती है तो अडचन पैदा करनेवाले को अपना दुश्मन मान लेते हैं और उनके खिलाफ फौरन 'युद्धं देही' एलान कर देते हैं। लगता है ये प्रेमी समाज में कुछ परिवर्त्तन लाना चाहते हैं जिस लिये उनका इस प्रकार का उग्र- विद्रोह फूट निकलता है। वे समझते नहीं हैं कि जिस समाज की परम्परा, रीति-रिवाज, मान्यताओं को वे तोडना चाहते हैं आगे चल कर उसी समाज का हिस्सा बनेंगे और जिन माँ-बाप के खिलाफ वे अशालिन मंतव्य करते हैं, आगे चल कर उन्हें भी माँ-बाप की भूमिका अदा करनी पडेगी।

प्रेम के प्रति इन प्रेमियों की प्रतिबद्धता सराहनीय होने पर भी समाज तथा परिवार के खिलाफ इनकी असहनीय रवैये को देखते हुए लोग उन्हें अविवेकी तथा निर्ल्लज की कोटि में रखते हैं। संकीर्ण दायरे में इनका प्रेम सिकुडने लगता है। प्रियपात्र साथ है तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता है। किसी कारण से यदि प्रियपात्र नहीं मिल सका या उसे कुछ हो गया तो ये प्रेमी इतना निराश हो जाते हैं कि खुदकुशी कर लेते हैं। यह प्रेम के लिये एक प्रकार के पागलपन की अवस्था है। दुर्दिन में ऐसे प्रेमियों के प्रति किसी की सहानुभूति नहीं जाती है। सब समझते हैं कि ये स्वार्थी हैं। प्रेम के लिये ये जीते हैं और प्रेम के लिये मर जाते हैं। राधानाथ राय के काव्य में इन प्रेमियों की मानसिकता तथा करतूतों पर परोक्ष रूप से व्यंग्य-विद्रुप कसा गया है और इन्हें सुधरने का संदेश भी दिया गया है।

संदर्भ

1. नंदिकेश्वरी-राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 71
2. केदारगौरी -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०-39
3. केदारगौरी -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 40
4. केदारगौरी -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 41
5. उषा -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 99-100
6. उषा -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 103
7. उषा -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 104
8. ययातिकेशरी- राधानाथ राय, राधानाथ ग्रंथावली,सं- डॅ० आदिकंद साहु, विद्या प्रकाशन, बालउबजार, कटक,2015,पृ०- 273
9. चंद्रभागा -राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 53
10. नंदिकेश्वरी-राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०- 71
11. नंदिकेश्वरी-राय, राधानाथ. राधानाथ ग्रथावली. बालू बजार, कटक: विद्या प्रकाशन, 2015, पृ०-70
12. ओडिआ साहित्यरे धारा ओ धरा आलोचना – बाणी रूपा सम्पादक मण्डली, बाणीरूपा, बांकाबजार, कटक-2, 1991, पृ०-144-145
13. रवींद्र समकालीन ओडिआ कविता – डा. हृषीकेश पण्डा, ओडिशा बुकस्टोर, बिनोद बिहारी, कटक-2,1988, पृ०-79
14. रोमाण्टिक काव्यानुभव ओ कवि विनोद नायक – डॅ० अशोक कुमार महापात्र, प्रतीची प्रकाशन, ब्रह्मपुर, 2000, पृ०- 80